२. गीत

– सलाम बिन रजाक

मेरे बेटे ने हमेशा की तरह उस रात भी कहानी सुनाने का अनुरोध किया ।

मैं काफी थका हुआ था इसपर दूरदर्शन से टेलिकास्ट होने वाली खबरों ने मन और मस्तिष्क और भी बोझिल कर दिया । लगता था पूरी दुनिया बारूद के ढेर पर बैठी है । एक जरा माचिस दिखाने की देर है बस । क्या इनसान पुनः आदिकाल की ओर लौट रहा है ?

मन बेचैन और मस्तिष्क परागंदा था । मैंने बेटे को पुचकारते हुए कहा,

''आज नहीं बेटा ! आज पापा बहुत थक गए हैं । हम तुम्हें कल सुनाएँगे एक अच्छी-सी कहानी ।''

बेटे की जिद के आगे मैंने थक-हारकर कहा, ''ठीक है, हम कहानी सुनाएँगे मगर तुम बीच में कोई प्रश्न नहीं पूछोगे ।''

''नहीं पूछूँगा ।'' उसने हामी भरी ।

''पुराने जमाने की बात है...'' मैंने कहानी शुरू की ।

''कितनी पुरानी ?'' वह बीच में बोल पड़ा ।

''ऊँ... हूँ... । मैंने कहा था ना, तुम कोई सवाल नहीं पूछोगे ।''

''ओ हो... सॉरी पापा !'' उसने कसमसाते हुए क्षमा माँगी ।

''वैसे बात बहुत पुरानी भी नहीं है ।'' मैंने कहानी जारी रखते हुए कहा । यही कोई पचास बरस हुए होंगे ।... या हो सकता है सौ-दो सौ बरस पुरानी हो ।... अधिक से अधिक हजार-बारह सौ बरस पुरानी भी हो सकती है या फिर इससे भी ज्यादा...।

कहते हैं उस ऊँची पहाड़ी के पीछे एक बस्ती थी । बस्ती, सचमुच बहुत पुरानी थी । बस्ती में ऊँचे-ऊँचे मकान थे । मकानों के आँगनों में फूलों की क्यारियाँ लगी थीं, जिनमें रंग-बिरंगे फूल खिलते थे और हवाओं में हर पल भीनी-भीनी खुशबू रची रहती थी । बस्ती के बाहर बागों का सिलसिला था, जिन में तरह-तरह के फलदार पेड़ थे । पेड़ों पर परिंदे सुबह-शाम चहचहाते रहते । बस्ती के पास से एक नदी गुजरती थी जिससे आस-पास की धरती जल संपन्न होती रहती । मनुष्य तो मनुष्य ढोर-डंगर तक को दाने-चारे की कमी नहीं थी । गायें बहुत-सारा दूध देतीं । बस्ती के लोग प्रसन्नचित्त, मिलनसार और

परिचय

जन्म : १९४१, पनवेल (महाराष्ट्र)
परिचय : सलाम साहब का अध्यापन और लेखन कार्य साथ-साथ चलता रहा है । आपके लेख, कहानियाँ विविध पत्र-पत्रिकाओं की शोभा बढ़ाते रहे हैं । आपको दिल्ली, उ.प्र., बिहार, महाराष्ट्र की साहित्य अकादमियों द्वारा विविध सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हुए हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'माहिम की खाड़ी', 'बादल की आपबीती', 'नन्हा खिलाड़ी', 'जिंदगी अफसाना नहीं', 'नंगी दोपहर का सच' आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत भावपूर्ण प्रतीकात्मक कहानी में लेखक सलाम बिन रजाक जी इशारा करते हैं कि जब लोगों की नीयत में खोट नहीं थी तो समाज में चारों तरफ सुख-शांति, समरसता, संपन्नता फैली हुई थी । आज लोगों में लालच, स्वार्थ असंतोष का विष घुल गया है । परिणामस्वरूप समाज में मनभेद, अशांति फैल गई है । मेल-मिलाप, सुख, जीवन के संगीत अदृश्य हो गए हैं ।

शांति एवं प्रेम के संदेश देने वालों के तन-मन लहू-लुहान हो रहे हैं । रजाक जी को भावी पीढ़ी से बहुत उम्मीदें हैं । आपका मानना है कि भावी पीढ़ी ऐसा संगीत रच सकेगी जिससे समाज में सुख-शांति, सौहार्द का वातावरण बन सकेगा ।

शांतिप्रेमी थे । पुरुष दिन भर खेत-खलिहानों और बागों में काम करते । पशु चराते, लकड़ियाँ काटते और औरतें चूल्हा-चक्की सँभालतीं । उनमें जो शक्तिवान थे कुश्तियाँ लड़ते, लाठी-बल्लम खेलते । चित्रकार चित्र बनाते और कवि गीत गाते थे । खुशियाँ रोज उस बस्ती की परिक्रमा करतीं और दुख भूले से भी कभी उधर का रुख न करते ।

कहते हैं बस्ती के पास ही एक घने पेड़ पर एक परी रहती थी । नन्ही-मुन्नी, मोहनी मूरत और मासूम सूरतवाली । बड़ी-बड़ी आँखों, सुनहरे बालों और सुर्ख गालोंवाली । परी गाँववालों पर बहुत मेहरबान थी । वह अकसर अपने चमकदार परों के साथ उड़ती हुई आती और उनके रोते हुए बच्चों को गुदगुदाकर हँसा देती । लड़कियों के साथ सावन के झूले झूलती, आँखमिचौली खेलती । लड़कों के साथ पेड़ों पर चढ़ती, नदी-नालों में तैरती । कभी किसी के खलिहान को अनाजों से भर देती, कभी किसी के आँगन में रंग-बिरंगे फूल खिला देती ।

दिन गुजरते रहे । समय का पंछी काले-सफेद परों के साथ उड़ता रहा और मौसम का बहुरूपिया नये रूप बदलता रहा । फिर पता नहीं क्या हुआ, कैसे हुआ कि एक दिन किसी ने उनके खेतों में शरारत का हल चला दिया । बस, उस दिन से उनके खेत तो फैलते गए, मगर मन सिकुड़ने लगे । गोदाम अनाजों से भर गए मगर नीयतों में खोट पैदा हो गई । अब वे अपनी निजी जमीनों के अतिरिक्त दूसरों की जमीनों पर भी नजर रखने लगे । नतीजे के तौर पर खेतों में मक्कारी की फसल उगने लगी और पेड़ छल-कपट के फल देने लगे । लालच ने उनमें स्वार्थ का विष घोल दिया । पहले वह मिल-बाँटकर खाते थे, मिल-जुलकर रहते थे मगर अब उनकी हर चीज विभाजित होने लगी । खेत-खलिहान, बाग-बगीचे, घर-आँगन यहाँ तक कि उन्होंने अपने पूजा घरों तक को आपस में बाँट लिया और अपने-अपने खुदाओं को उनमें कैद कर दिया । उनकी आँखों की कोमलता और दिलों की उदारता हथेली पर जमी सरसों की तरह उड़ गई । दावतों का सिलसिला बिखर गया और महफिलें उजड़ गईं । तस्वीरों के रंग अंधे और गीतों के बोल बहरे हो गए । अब न कोई तस्वीर बनाता था; न कोई गीत गाता था । हर घड़ी, हर कोई एक-दूसरे को हानि पहुँचाने की फिक्र में रहता ।

बस्तीवालों के ये बदले हुए रंग-ढंग देखकर वह नन्ही परी बहुत दुखी हुई । वह सोचने लगी, आखिर बस्तीवालों को क्या हो गया है? ये क्यों एक-दूसरे के बैरी हो गए हैं ? मगर उसकी समझ में कुछ नहीं आया । वह अब भी बस्ती में जाती, बच्चों को गुदगुदाती और औरतों

मौलिक सृजन

''क्षमा एक महान गुण है''- इसपर अपने विचार लिखो ।

के साथ गीत गाती, उनके खेत-खलिहानों के चक्कर लगाती, आँगनों में घूमती-फिरती । मगर अब, वह सब उसकी तरफ बहुत कम ध्यान देते। बस्तीवालों की उपेक्षा के कारण नन्ही परी उदास रहने लगी । आखिर उसने बस्ती में आना-जाना कम कर दिया ।

फिर एक दिन ऐसा आया कि उसने बस्ती में आना-जाना बिलकुल बंद कर दिया ।

बस्तीवाले आपस में झगड़े-टंटों में इतने उलझे हुए थे कि शुरू में उन्हें उसकी अनुपस्थिति का आभास ही नहीं हुआ । मगर जब सुहागनों के गीत बेसुरे हो गए और कुँआरियों ने पेड़ों की टहनियों से झूले उतार लिए और बच्चे खिलखिलाकर हँसना भूल गए तब उन्हें एहसास हुआ कि उन्होंने अपनी कोई अनमोल वस्तु खो दी है । बस्तीवाले चिंतित हो गए । उसे कहाँ ढूँढ़ें, कहाँ तलाश करें?

पहले तो उन्होंने उसे अपने घरों के आँगनों में तलाश किया । मैदानों में भटके, पेड़ों पर और गुफाओं में देखा, मगर वह कहीं नहीं थी । अब उनकी चिंता बढ़ने लगी । मगर बजाय इसके कि वे मिल-बैठकर, सर जोड़कर उसके बारे में सोचते । वे एक-दूसरे पर आरोप लगाने लगे कि परी उनके कारण रूठ गई है । अब तो उनके दिलों की नफरत और भी गहरी हो गई ।

उन्होंने एक-दूसरे के खेत-खलिहानों को नष्ट करना और पशुओं को चुराना शुरू कर दिया । धोखा, फरेब, लूटमार, हत्या, विनाश रोज का नियम बन गया ।

जब पानी सर से ऊँचा हो गया और बचाव का कोई उपाय न रहा तब बस्तीवालों ने तय किया कि इस प्रतिदिन के उपद्रव से अच्छा है इस किस्से को हमेशा के लिए खत्म कर दिया जाए ।

इस निर्णय के बाद वे दो गुटों में बँट गए । सारे युवक हाथों में बल्लम और तलवारें लिए मैदान में एक दूसरे के सम्मुख आकर खड़े हो गए । उनकी आँखों से क्रोध और नफरत की चिंगारियाँ निकल रही थीं और उनकी मुट्ठियाँ बल्लम और तलवारों की मूठों पर मजबूती से कसी हुई थीं। एक-दूसरे पर झपट पड़ने को तैयार खड़े थे ।

तभी एक अनहोनी हो गई । फिजा में एक महीन-सा सुर बुलंद हुआ। जैसे किसी परिंदे का कोमल पर हवा में काँप रहा हो । कोई गा रहा था ।

उन्होंने आवाज की ओर देखा । पहले तो उन्हें कुछ दिखाई नहीं दिया मगर जब उन्होंने बहुत ध्यान से देखा तो उन्हें नन्ही परी एक पेड़ की डाल पर बैठी दिखाई दी । उसके बाल बिखरे हुए और गाल

लेखनीय

दैनिक जीवन से अलग किसी-घटना/स्थिति पर संवाद, भाषण लिखो ।

संभाषणीय

परिवहन के नियमों का पालन करने से होने वाले लाभ बताओ ।

आँसुओं से भीगे हुए थे । पर नुचे हुए और कपड़े फटे हुए थे, जैसे वह घनी काँटेदार झाड़ियों के बीच से गुजरकर आ रही हो । उसके पाँव नंगे और तलवे जख्मी थे । वह पेड़ से उतरकर मैदान के बीच में आकर खड़ी हो गई । उसने दोनों हाथ फिजा में बुलंद कर रखे थे जैसे उन्हें एक दूसरे पर हमला करने से रोकना चाहती हो ।

तलवारों की मूठों और बल्लमों पर कसी हुई मुट्ठियाँ तनिक ढीली हुईं ।

वह गा रही थी । उसकी आवाज में ऐसा दर्द था कि उनके सीनों में दिल तड़प उठे । आवाज धीरे-धीरे बुलंद होती गई, इतनी बुलंद जैसे सितारों को छूने लगी हो । उसकी आवाज चारों दिशाओं में फैलने लगी । फैलती गई । इतनी फैली कि चारों दिशाएँ उसकी आवाज की प्रतिध्वनि से गूँजने लगीं । लोग अचरज से आँखें फाड़े, मुँह खोले उसका गीत सुनते रहे, सुनते रहे ।

यहाँ तक कि उनके हाथों में दबी तलवारें फूलों की छड़ियों में परिवर्तित हो गईं और बल्लम मोरछल बन गए ।

गीत के बोल उनके कानों में रस घोलते रहे और धीरे-धीरे वह सब एक-दूसरे से एक अनदेखी-अनजान डोर से बँधते चले गए । जैसे वह सब एक ही माला के मोती हों, जैसे वह एक ही माँ के जाये हों ।

उधर गीत समाप्त हुआ और वह अपनी मैली आस्तीनों से आँसू पोंछते हुए एक-दूसरे के गले लग गए ।

जब आँसुओं का गुबार कम हुआ तो उन्होंने अपनी प्यारी परी को तलाश करना चाहा मगर वह उनकी नजरों से ओझल हो चुकी थी । बस्तीवालों ने उसे बहुत ढूँढ़ा, वादी-वादी, जंगल-जंगल आवाजें दीं, मिन्नतें कीं, मगर वह दोबारा जाहिर नहीं हुई । तब बस्तीवालों ने उसकी याद में एक मूर्ति बनाई, उसे बस्ती के बीचोंबीच मैदान में स्थापित कर दिया ।

कहते हैं; आज भी बस्ती के लोगों में जब कोई विवाद होता है, सब मैदान में उस मूर्ति के गिर्द इकट्ठे हो जाते हैं और उस गीत को दोहराने लगते हैं । इस तरह बस्तीवाले आज भी उस गीत के कारण शांति और चैन से जिंदगी बिता रहे हैं ।

जैसे उनके दिन फिरे; खुदा हम सब के भी दिन फेरे।''

मैंने कहानी खत्म करके अपने बेटे की तरफ देखा । चेहरा बिलकुल सपाट था । मैंने जम्हाई लेते हुए कहा, ''चलो, अब सो जाओ, कहानी खत्म हो गई ।''

उसने कहा, ''पापा, आपने कहा था, कहानी सुनाते समय कोई

पठनीय

अंतरजाल पर बाबा आमटे जी के समाजोपयोगी प्रकल्पों की जानकारी पढ़ो ।

प्रश्न नहीं पूछना ।''

''हाँ... मैंने कहा था और तुमने कोई प्रश्न नहीं पूछा । तुम बड़े अच्छे बच्चे हो । अब सो जाओ ।''

''मगर पापा कहानी तो खत्म हो गई । मैं अब तो प्रश्न पूछ सकता हूँ ना ?''

मैं थोड़ी देर चुप रहा । फिर बोला, ''चलो पूछो, क्या पूछना चाहते हो ।'' ''पापा! वह कौन-सा गीत था जिसे सुनकर गाँववाले दोबारा गले मिलने पर मजबूर हो गए ।''

मैंने चौंककर उसकी ओर देखा । थोड़ी देर चुप रहा, फिर बोला ।

''मुझे वह गीत याद नहीं है बेटा !''

''नहीं पापा'' उसने मचलते हुए कहा, ''मुझे वह गीत सुनाइए, वरना मैं समझूँगा कि आपकी कहानी एकदम झूठी थी ।''

मैं थोड़ी देर चुप रहा, फिर दबे स्वर में बोला, ''हाँ, बेटा यह कहानी झूठी है। कहानियाँ अकसर काल्पनिक होती हैं ।''

वह मुझे उसी तरह अपलक देख रहा था। मैंने उसकी आँखों में झाँकते हुए कहा, ''मगर तुम इस झूठी कहानी को सच्ची बना सकते हो ।'' ''वह कैसे ?'' उसने हैरानी से पूछा ।

''बड़े होकर तुम वैसा गीत लिख सकते हो जैसा उस परी ने गाया था ।'' बेटे की आँखों में चमक पैदा हुई, ''सच पापा !''

''एकदम सच ।''

उसने मेरे गले में बाँहें डाल दीं । ''यू आर सो स्वीट पापा ।''

उसने आँखें बंद कर लीं । वह जल्द ही सो गया । मगर मैं रात में बहुत देर तक जागता रहा । बार-बार मेरे मन में एक ही विचार कुलबुला रहा था कि क्या मेरा बेटा वैसा गीत लिख सकेगा ?

— o —

श्रवणीय

''कर भला तो हो भला'' इस कथन से संबंधित कहानी सुनो और कक्षा में सुनाओ ।

शब्द वाटिका

परागंदा = अस्तव्यस्त
मोरछल = मोरपंख का बना चँवर
अनुरोध = विनती
बोझिल = भारी, वजनदार
अभ्यस्त = जिसने अभ्यास किया हो, निपुण
अपलक = एकटक

मुहावरे

दिल तड़पना = बेचैन होना
आँखें फाड़कर देखना = आश्चर्य से देखना
नजरों से ओझल होना = गायब होना
गले लगाना = प्यार से मिलना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–**

(१) संजाल पूर्ण करो :

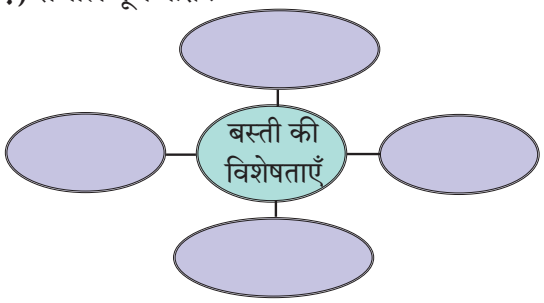

(२) उत्तर लिखो :

१. पाठ में प्रयुक्त दो हथियार

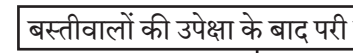

२. बस्तीवालों की उपेक्षा के बाद परी के मन के भाव

(३) प्रवाह तालिका पूर्ण करो :

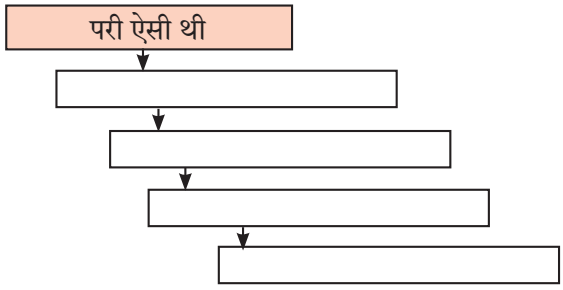

(४) कारण लिखो :

१. बस्ती के आस-पास की जमीन उपजाऊ थी .....

२. नन्ही परी दुखी हो गई .....

३. बस्तीवाले चिंतित हो गए .....

४. लेखक ने चौंककर अपने बेटे की ओर देखा .....

(५) उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

अ	उत्तर	आ
शक्तिवान		बहुरूपिया
सावन		सिलसिला
मौसम		झूले
दावत		कुश्तियाँ

(६) कहानी में उल्लिखित परी का वर्णन करो ।

सदैव ध्यान में रखो लोककथा एवं लोकगीत हमारी साहित्यिक पूँजी हैं ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन दया, क्षमा, निःस्वार्थ वृत्ति से संबंधित सुवचनों का चार्ट बनाकर कक्षा में लगाओ ।

भाषा बिंदु

चौखट में दिए गए मुहावरे-कहावतों का वाक्यों में प्रयोग करो और विकारी शब्द लिखो :

बहती गंगा में हाथ धोना	तू डाल-डाल, मैं पात-पात
खोदा पहाड़ निकली चूहिया	वह पानी मुलतान गया
घमंडी का सिर नीचा	छूछा कोई न पूछा
चोरों की बारात में अपनी-अपनी होशियारी	जाके पाँव न फटी बिवाई वह क्या जाने पीर पराई
दाल में काला होना	जिसकी लाठी उसकी भैंस
कभी तोला कभी मासा	अपने मुँह मियाँ मिट्ठू होना
एक अनार सौ बीमार	घाव पर नमक छिड़कना
इस कान से सुनना उस कान से निकालना	नाक पर मक्खी न बैठने देना

विकारी शब्दों के भेद :

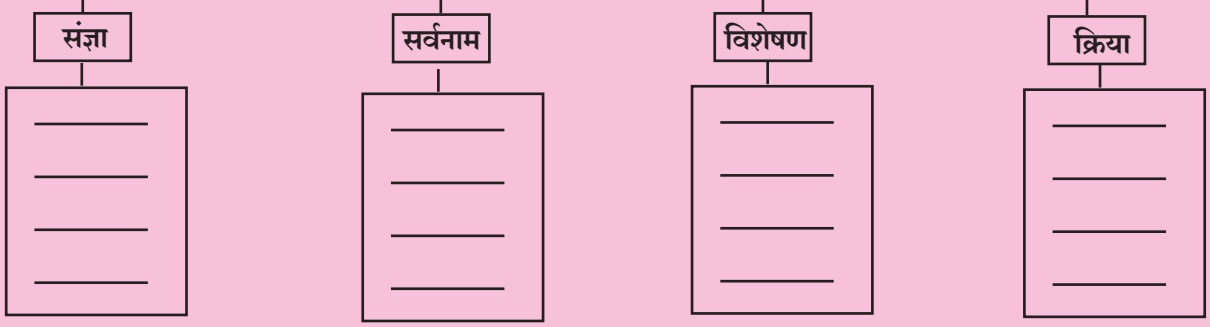

उपयोजित लेखन

कोई साप्ताहिक पत्रिका अनियमित रूप में प्राप्त होने के कारण पत्रिका के संपादक को शिकायती पत्र निम्न प्रारूप में लिखो :

पत्र का प्रारूप
(औपचारिक पत्र)

दिनांक :
प्रति,
.....
.....
विषय :.....
संदर्भ : .....
महोदय,
विषय विवेचन

भवदीय/भवदीया,
.....
नाम : .....
पता : .....
.....
ई-मेल आईडी : .....